माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण का उनके शैक्षिक स्थगन से संबंध का अध्ययन

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ से शिक्षाशास्त्र विषय में पीएच0डी0 उपाधि हेतु प्रस्तुत

डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी

शोध सारांश

शोधार्थी

शिव मगन

नामांकन संख्याः 1311/18

शोध निर्देशक

प्रो. हरिशंकर सिंह

शिक्षाशास्त्र विभाग

शिक्षाशास्त्र विद्यापीठ

बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

विद्या विहार, रायबरेली रोड, लखनऊ–226025

उत्तर प्रदेश, भारत

2023

शोध–सारांश

प्रस्तावना

शैक्षिक स्थगन छात्रों के बीच प्रचलित एक ऐसी प्रवृत्ति है जो की गंभीर रूप से उनकी उपलब्धियों और क्षमताओं को प्रभावित करती है। शैक्षिक स्थगन प्रायः शिक्षा में स्थगित होने की स्थिति को दर्शाता है। इसके अन्य पर्याय शब्द है– शैक्षिक शिथिलता, शैक्षिक विलम्ब, अध्ययन में टालमटोल आदि। शैक्षिक स्थगन एक ऐसी प्रवृत्ति है जिससे छात्र शैक्षिक कार्यों को परवर्ती समय के लिए टाल देते है और परिणामस्वरूप वे अपनी जिम्मेंदारी को पूरा नहीं कर पाते। समकालीन समाज में शैक्षणिक क्षेत्र में स्थगन एक प्रवृत्ति है। मैककॉन और जॉनसन (1989) के अनुसार 25 प्रतिशत वयस्क आबादी के लिए स्थगन एक गंभीर समस्या है। एलिस एवं नॉस (1977) द्वारा किये गये अध्ययन में 70 प्रतिशत छात्रों में स्थगन की प्रवृत्ति पायी गयी। शैक्षिक स्थगन के परिणामस्वरूप छात्रों में हानिकारक प्रभाव देखे गये है जैसे, तनाव, अपराध बोध, व्यक्तिगत उत्पादकता की हानि, आत्म–सम्मान में कभी, निराशा और शैक्षिक विफलता। इन संयुक्त भावनाओं से छात्रों में स्थगन की प्रवृत्ति और दृढ़ होती है। प्रथम दृष्ट में स्थगन एक सामान्य सी समस्या दिखाई पड़ती है किन्तु कुछ समय के उपरान्त यह एक गंभीर समस्या का रूप धारण कर लेती है जिसका छात्रों पर नकारात्मक प्रभाव देखा गया है। दीर्घकालीन स्थगन अंतर्निहित विकार का संकेत हो सकता है। जिसके कारण अधिगम अक्षमता व मानसिक दौर्बल्य हो सकता है जो शिक्षा में अरूचि को उत्पन्न करता है यह अरूचि छात्र को शैक्षिक कार्य में विलम्ब कराती है। बालक के मूल स्वभाव का निर्माण पारिवारिक पृष्ठ भूमि एवं वातावरण में होता है। गृह वातावरण के अनेक कारक पृथक रूप से बालक में अध्ययन आदतों का विकास करते है गृह के वातावरण से बालक को अनुभवों, व्यवहारों, वास्तविकताओं और कल्पनाओं पर चिन्तन करने का अवसर प्राप्त होता है। बालक को अच्छी अध्ययन आदतों के बारे में सर्वप्रथम उसके अभिभावक ही ज्ञात कराते हैं। गृह वातावरण बालक के सर्वांगीण विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। माता–पिता का मार्गदर्शन और निगरानी बालक के व्यक्तित्व को ढालने में और उसकी शैक्षिक उपलब्धियों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सर्वविदित है कि

माता–पिता और गृह वातावरण बालक की शैक्षणिक उपलब्धि और व्यवहार को बनाते और प्रभावित करते है। (बौम्रिंड, 1993, ब्रैडली एवं कुैलडवेल, 1984; डिकिन्सन, 1995; डॉनबिश, रिंटर, लीडरमैंन, मैकोबी एवं मार्टिन, 1983; शिया एवं हॉफमैन, 1977)। गृह वातावरण के साथ बालक के सर्वांगीण विकास में विद्यालय का महत्वपूर्ण योगदान होता है। विद्यालय के वातावरण कठोर प्रशिक्षण, अनुशासन और वातावरण से बालक के व्यक्तिगत में बदलाव आते है। विद्यालय बालक के समग्र विकास में एक आदर्श मंच के रूप में कार्य करता है। वह बालक को प्रशिक्षित कर उसके शैक्षिक उत्कृष्टता की ओर ले जाता है। गृह वातावरण से बाहर निकलकर बालक विद्यालय में प्रवेश करता है तब वहॉ का वातावरण उस पर प्रमुख प्रभाव डालता है और इसके संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक क्षेत्रों का विकास करता है। घबराहट और असफलता का डर स्थगन के प्रभावशाली कारकों में से है (सोलोमन एंव रोथब्लम, 1984)। यदि विद्यालय छात्रों के लिये एक सुखद और अनुकूल वातावरण बनाए तो प्रत्येक छात्र विद्यालयी शिक्षा का सुखद अनुभव कर सकता है। इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि छात्रों अध्ययन आदतों, व्यवहार और समग्र विकास में गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। यह दोनों वातावरण छात्र को उत्कृष्टता की ओर ले जा सकते है उसकी के विपरीत अगर गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण नकारात्मक है तो वह छात्र में नकारात्मक प्रभाव डाल सकते है जैसे की आत्म विश्वास में कमी, असफलता का डर, निराशा, आदि जो कि उसमें स्थगन प्रवृत्ति के विकास को पोषित कर सकता है। प्रस्तुत शोध में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के शैक्षिक स्थगन और उसका गृह एवं विद्यालय वातावरण से सम्बन्ध समझने का प्रयास किया गया है।

स्थगन

मानव प्रवृत्तियों में पायी जाने वाली अनेक प्रवृत्तियों में से एक है आज के कार्य को कल पर टालना या स्थगित करना इस प्रवृत्ति को मनोवैज्ञानिक, स्थगन, विलंबन, अनिच्छुकता व्यवहार वाले व्यवहार को स्थगन व्यवहार के रूप में परिभाषित किया गया है।

अंग्रेजी शब्द Procrastination की उत्पत्ति लैटिन शब्द Procrastinare से है। Pro का अर्थ होता है आगामी गतियाँ और Crastinare का अर्थ होता है कल से सम्बन्धित। Procrastination का अर्थ होता है वह कार्य जो आगामी कल से सम्बन्ध रखता है। अर्थात् ˛ ऐसा कार्य जिसमें व्यक्ति अपने वर्तमान कार्य को निलंबित अथवा स्थगित कर के उसे कल पर टाल देता है, स्थगन व्यवहार है।

हिन्दी शब्दकोश में स्थगन के लिए अनेक पर्यायवाची प्रयोग किये गये है जैसे–संदिग्ध व्यवहार, विलम्बन व्यवहार, अनिच्छुकता व्यवहार आदि। दैनिक प्रयोग की जाने वाली भाषा में स्थगन को टालमटोल करना, अगर–मगर करना, आजकल करना, बहानेबाजी करना आदि कहा जाता है। इस सम्बन्ध हमारे सुविख्यात कवि सन्त कबीरदास जी ने अपने दोहे में कहा है–

काल करे से आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

(अर्थः कबीरदास जी समय की महत्ता बताते हुए कहते है कि जो कल करना है उसे आज करो और और जो आज करता है उसे अभी करो, कुछ ही समय में जीवन खत्म हो जायेगा फिर तुम क्या कर पाओगे।)

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने Procrastination के लिए स्थगन शब्द का प्रयोग किया है।

स्थगन का परिभाषीकरण

मनोवैज्ञानिकों और विशेषज्ञों द्वारा स्थगन व्यवहार को विभिन्न रूप से परिभाषित करने का प्रयास किया गया है।

- **क्राइस्टोफर पारकर** के अनुसार ''स्थगन एक क्रेडिट कार्ड की तरह है इसमें तब तक आनन्द आता है जब तक इसका बिल न प्राप्त होता है।''
- **ले (1986)** के अनुसार स्थगन का अर्थ है ''किसी लक्ष्य तक पहुंचने के लिए जो आवश्यक है उसे ताल देना।''

- **सेम्यूल जॉनसन (1751)** के मतानुसार ''स्थगन एक सामान्य क्षीणता है, जो कि अनेक नैतिक निर्देशों व कारणों के विरोध के बाद भी प्रत्येक व्यक्ति के मस्तिष्क में कम या अधिक मात्रा में विद्यमान रहती है।''
- **डेवटी एवं लन्स (2000)** ने स्थगन व्यवहार को कार्य टालने की प्रवृत्ति के रूप में तथा संज्ञानात्मक रूप में निर्णय निर्धारण में विलंब की प्रवृत्ति के रूप में बताया।
- **शॉवेनवर्ग (2004)** ने कहा कि ''विलंब करने का अर्थ है कि एक वैकल्पिक गतिविधि करना, एक इरादा जो आलस का पर्याय नहीं है।''

स्थगन की विशेषताएँ

स्थगन की निम्नलिखित विशेषताएं प्रतिबिम्बित होती है।

- स्थगन एक स्वभावगत विशेषता है।
- यह प्रवृत्ति विशेषकर किशोरावस्था, वयस्कावस्था में प्रमुखतः, दृष्टिगोचर होती है।
- स्थगन प्रवृत्ति में वैयक्तिक भिन्नता पायी जाती है।
- स्थगन एक अर्जित व्यवहार है इस कारण इस पर वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है। सामाजिक परिवेश, गृह वातावरण, पारस्परिक अंर्तवैयक्तिक सम्बन्ध और कार्य दशाएं सब इस प्रवृत्ति को प्रभावित करती है।
- स्थगन व्यक्तिक, रूचि, अभिरूचि, कार्य की आवश्यकता, कार्य के प्रति अभिवृत्ति और अभिप्रेरणा स्तर से भी प्रभावित होता है।
- स्थगन प्रवृत्ति वाले व्यक्ति सरल एवं आनंददायक कार्यों के प्रति आकर्षित होते है अथवा जो कार्य उन्हें रूचिकर लगे उसके प्रति वह आकर्षित होते है।
- स्थगन प्रवृत्ति के कारण व्यक्ति कार्यों के प्रति असंवेदनशील हो जाता है। वह किसी भी कार्य को गंभीरतापूर्वक नहीं पूर्ण करता।

एतिस एवं नॉम (1977) ने स्थगन करने वाले व्यक्तियों अपरिहार्य चरों को प्रस्तावित किया है।

किसी कार्य को पूरी करने की इच्छा।

↓

कार्य करने का निर्णय लेना।

↓

कार्य में अनावश्यक विलम्ब करना।

↓

कार्य में कमी देखना।

↓

कार्य को स्थगित करना।

↓

कार्य में स्थगन के लिए स्वयं को दोष देना।

↓

स्थगन को जारी रखना।

↓

कार्य को अंतिम समय पर पूर्ण करना अथवा अपूर्ण छोड़ देना।

↓

असहज महसूस करना।

↓

कार्य को फिर से स्थगित करने के बारे सोचना और स्वयं को अस्वस्थ करना।

↓

फिर से कार्य स्थगन में उलझ जाना।

स्थगन करने वालों की विशेषताएँ

स्थगन प्रवृत्ति एक जटिल मनोवैज्ञानिक व्यवहार है।

1. स्थगन प्रवृत्ति वाले व्यक्ति दूसरों एवं स्वयं को निराश करते है क्योंकि वे कार्य को समय पर पूर्ण नहीं कर पाते।
2. वे निष्क्रिय आक्रामक व्यवहार द्वारा उत्पन्न नकारात्मक ध्यान के माध्यम से लगातार उत्तेजना चाहते है।
3. वे नियोजित भेंट के लिए लगातार देर से आते है।
4. नियमित स्थगन से वे खराब शैक्षिणिक उपलब्धि प्राप्त करते है।
5. इस प्रकार के व्यक्ति पढ़ाई करने से बचते है और दि्वास्पन देखने और कम महत्वपूर्ण कार्यों में व्यस्त रहते है।
6. स्थगन प्रवृत्ति वाले व्यक्ति कम आत्मविश्वास एवं कम आत्मसम्मान की भावनाओं से जूझते रहते है।
7. भले ही उच्च स्तर के प्रदर्शन परजोर दे वे वास्तविकता में उच्च स्तर को प्राप्त करने में स्वयं को असक्षम और अयोग्य मानते है।
8. इस प्रकार के व्यक्ति अपने कारणों को उचित ठहराते है और इस प्रक्रिया में काफी समय व्यर्थ कर देते है।
9. स्थगन प्रवृत्ति के व्यक्ति दूसरों के व्यवहारों को नियंत्रित एवं प्रभावित कर सकते है।
10. स्थगन व्यवहार को दूर करना प्रायः कठिन होता है क्योंकि यह व्यवहार दिन प्रतिदिन के दबावों से निपटने का तरीका बन जाता है।
11. इस प्रकार के व्यक्ति अपने व्यवहार को समझ नहीं पाते और यह उनके लिए निराशाजनक हो जाता है।

12. स्थगन को दो वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

स्थगन के प्रकार

मनोवैज्ञानिकों द्वारा स्थगन को दो वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

1. **व्यक्तित्व लक्षण** – इस प्रकार का स्थगन मुख्यता दैनिक दिनचर्या में पाया जाता है।
2. **सशर्त स्थगन :–** इस प्रकार का स्थगन में शैक्षणिक स्थगन आता है।

मिलग्राम, बटोरी और मोवरर (1993) स्थगन की पांच श्रेणियों की पहचान करते है।

1. जीवन का नियमित स्थगन
2. निर्णयात्मक स्थगन
3. विक्षिप्त स्थगन
4. बाध्यकारी स्थगन
5. शैक्षणिक स्थगन

स्थगन का अध्ययन पांच भिन्न उपशीषर्कों के अन्तर्गत किया जा सकता है।

1. **सामान्य स्थगन** – इस प्रकार के स्थगन को सामान्य व्यवहार के रूप में देखा जाता है। इस प्रकार का स्थगन तब होता है जब व्यक्ति समय और प्रबंधन को उचित प्रकार व्यवस्थित करने में असमर्थ हो जाता है और उससे दैनिक कार्य प्रभावित होते है। (फेरारी, 1995)

2. **शैक्षणिक स्थगन** – सोलोमन और रोथब्लम् (1984) ने इस प्रकार के स्थगन को गृहकार्य करने, परीक्षा की तैयारी करने और विद्यालय द्वारा नियत कार्य को अंतिम समय के लिए स्थगित करना के रूप में परिभाषित किया है।

3. **निर्णय सम्बन्धी स्थगन** – इस प्रकार के स्थगन को उचित निर्णय लेने में असमर्थता के रूप में चित्रित किया गया है। (एकर्ट एवं फेरारी, 1989)

4. **विक्षिप्त स्थगन** – इस प्रकार के स्थगन को जीवन के महत्वपूर्ण मामलों के बारे में स्थगन व्यवहार के रूप में परिभाषित किया गया है। (एलिस एवं नॉस, 1987)

5. **गैर कार्यात्मक स्थगन** – इस प्रकार के स्थगन को व्यवहार सम्बन्धी निर्णय लेने में विलंब के रूप में चित्रित किया गया है।

स्थगन के कारण

स्टील (2007) के अनुसार स्थगन पर प्रचुर मात्रा में शोधकार्य किये गये है। और सभी शोधकर्ताओं ने स्थगन के अनेक कारणों पर प्रकाश डाला है। इन शोधकार्यों को संदर्भ में रखते हुए स्टील (2007) स्थगन को निम्न कारणों द्वारा उत्पन्न प्रतिक्रिया बताया गया है।

1. **कार्य की विशेषता** :– स्थगन में व्यक्ति स्वेच्छा से कोई एक कार्य पसंद करता है। कार्य का चयन तर्कहीन नहीं होता है अर्थात् ् अगर व्यक्ति किसी विशेष कार्य में स्थगन या विलंब करता है तो वह मुख्यतः उस कार्य की प्रवृत्ति एवं विशेषता के कारण होता है इसके दो प्रमुख कारण है पुरस्कार और दण्ड एवं कार्य विमुखता।

2. **कार्य विमुखता** :– यह एक स्व–व्याख्यात्मक शब्द है जो कि अंग्रेजी में डिस्फोरिक प्रभाव के रूप में भी जाना जाता है। मिलग्राम, स्रोलॉफ एवं रोसेनबाम, 1988। यह उन कार्यों को संदर्भित करता है जो अप्रिय होते है। परिभाषा के अनुसार ऐसे कार्य जो कि अप्रिय है वे व्यक्ति द्वारा स्थगित करने की ज्यादा संभावना होती है। कार्य जितने अप्रिय होंगे व्यक्ति द्वारा उसे स्थगित करने की उतनी अधिक संभावना होती है।

3. **व्यक्तिगत भिन्नता** :– व्यक्तिगत भिन्नता और स्थगन प्रवृत्ति के बीच सम्बन्ध पर अनेक शोधकार्य हुए है। स्टील (2007) ने दो समूह में व्यक्गित भिन्नता और स्थगन से सम्बन्ध रखने वाले पहलुओं को विभाजित किया है। एक है मनोविक्षुब्धता जिसके चार पहलु है :– तर्कहीन, विश्वास, आत्मप्रभावकारिता,

आत्म–सम्मान, आत्म–ग्लानि और अवसाद दूसरा पहलू है। बर्हिमुखता इसके तीन पहलू है– सकारात्मक प्रभाव, आवेग और संवेदना, तीसरा पहलू है सहमतता और चौथा पहलू है– बुद्धिमत्ता अभिवृत्ति।

4. **विक्षिप्तता :–** स्थगन का एक कारण विक्षिप्तता को भी माना जाता है। यह चिता व्यग्रता और नाकारात्मक प्रभाव के समान है। शोधकर्ताओं के अनुसार कार्यों में स्थगन का कारण यह भी हो सकता है कि वे तनावपूर्ण और प्रतिकूल हो। जो व्यक्ति तनाव का अनुभव करते है वे अधिक संवदेनशील होते है (आर0टी0ब्राउन 1991, बुर्का, 1983 एवं एलिस और नास, 1977)।

5. **अंतार्किक विश्वास :–** इस प्रकार के विश्वास से व्यग्रता उत्पन्न होती है यह स्थगन से ठीक उसी प्रकार सम्बन्धित जैसे विक्षिप्तता स्थगन से सम्बन्धित है। यह कार्यों को अप्रिय बना देते है और इस कारण व्यक्ति कार्यों को स्थगित करते है। नॉस (1973) के अनुसार तर्कहीन विश्वास में दो का स्थगन से सम्बन्धित है : स्वयं को अनुउपयुक्त मानना और संसार को निष्क्रिय और अत्यधिक अपेक्षा करने वाला समझना, तार्किक विश्वास रखने वाले व्यक्ति विफलता, आत्म–चेतना ओर मूल्यांकन के भय से कार्य स्थगित करते है। मिलग्राम और कून्स, 2000, बुर्का और यू. एन, 1983।

6. **आत्म–प्रभावकारिता और आत्म–सम्मान में कमी:–** विशेषकर तर्कहीन विश्वास से प्रभावित व्यक्ति स्वयं की प्रतिभा पर विश्वास नहीं करते और आत्म–सम्मान से कमी होने के कारण असफलता से डरते है। इसी असफलता के भय, कम आत्म–प्रभावकारिता और कर्म आत्म–सम्मान के कारण वह कार्यों को स्थगित करता रहता है (बुर्का एवं यू. एन, 1983, जज एवं बोनो, 2001)।

7. **आवेगशीलता :–** स्थगन के प्रमुख कारणों में आवेग को माना गया है। आवेगशील व्यक्ति प्रमुख रूप से स्थगन करते है वे दूरगामी परिणामों पर ध्यान केन्द्रित न करके वस तात्कालिक संतुष्टि के पीछे भागते है। इस प्रकार वे दीर्घकालिक दायित्वों की अपेक्षा करते है।

8. **एकाग्रता का ह्रास :–** आत्म संयम के लिए ध्यान महत्वपूर्ण है। यह मत सिगमंड फ्रायड (1961) विलयम जेन्स (1890) ऑटिन और कलेन (1996) और कुहल जैसे शोधकर्ताओं का है। अगर व्यक्ति विचलित करने वाले विचारों और परिस्थितियों को नियंत्रित करना सीख जाये तो वह कार्यों के स्थगन को रोक सकता है।

9. **उपलब्धि अभिप्रेरणा :–** किसी भी कार्य को करने के लिए अभिप्रेरणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस अभिप्रेरणा में उपलब्धि द्वारा मान प्राप्त करना होता है। उच्च उपलब्धि अभिप्रेरणा रखने वाले लोग अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करते है। उपलब्धि अभिप्रेरणा अंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की होती है।

10. **प्रयोजन बनाम अनभिप्रेत अंतरः–** यह उस स्तर को संदर्भित जिस स्तर तक व्यक्ति अपनी योजनाओं या कार्यों को पूर्ण करने हेतु योजना बनाता है। शोधकर्ताओं का मानना है कि स्थगन कई बार अनैच्छिक होता है व्यक्ति कई बार कार्यों को सप्रयोजन न स्थगित करके बिना प्रयोजन से स्थगित करता है। ऐसा वह किसी स्तर पर कार्य का पूर्ण करने के कारण भी करता है।

स्थगन से बचाव

स्थगन व्यक्ति को असफलता की ओर ले जाता है इसके अनेक नकारात्मक प्रभाव होते है। आवश्यक कार्यों को विलंबित या स्थगित करने से तनाव का स्तर बढ़ जाता है स्थगन व्यवहार को रोकने के लिए निम्न लिखित उपाय कर सकते है।

- सर्वप्रथम यह स्वीकार करना कि हम कार्यों को स्थगित करते है।
- उपलब्ध समय को उचित प्रकार से प्रतिबंधित करना।
- कार्यों को प्राथमिकता के क्रम से निर्धारित करना।
- कार्यों को विशेष अवधि तक स्थगित न करना ताकि समयावधि पर कार्यों का अत्यधिक कार्यों दबाव न बने।

- किसी भी कार्य के बारे में अधिक न सोचे अन्यथा सोचने में अधिक समय व्यतीत होता है।
- कार्यों की आवश्यकता ज्ञात होना।
- अपने आपको कभी पराजित न माने।
- किसी भी कार्य को करने के लिए आवश्यक योग्यता एवं क्षमताओं के संदर्भ में स्वयं को सही ढंग से मूल्यांकित करें।
- बहुत अधिक पूर्णतावादी न बने।
- स्वयं के बारे में नकारात्मक न रखे अपने आप में आत्म विश्वास एवं आत्म–सम्मान रखे।
- कठिन एवं अरूचिकर कार्यों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया स्पष्ट रखे।

शैक्षिक स्थगन :– समाज में शैक्षिक स्थगन छात्रों की मध्य एक व्यापक समस्या है। शिक्षा के क्षेत्र में कार्यों को विलंबित करना शैक्षिक स्थगन कहलाता है। शैक्षणिक क्षेत्र में शैक्षिक लक्ष्यों को उस सीमा तक स्थगित करना जहां पर सर्वोच्च प्रदर्शन संभावना न्यूनतम रह जाती है और मनोवैज्ञानिक तनाव की स्थगित उत्पन्न हो जाती है ऐसे प्रक्रिया को शैक्षिक स्थगन के रूप में परिभाषित किया गया है (एलिस और नॉस, 1977, फेरारी एट एल, 1995)। हेकॉक एट एल, 1998 के अनुसार विद्यालयी जीवन में विद्यालय से सम्बन्धित कार्य में देरी करना एवं उनको अंतिम समय के लिए बिलंबित करना शैक्षिक स्थगन कहलाता है।

मिनग्राम एट0एल0 (1998) ने शैक्षिक स्थगन को एक व्यावहारिक स्वभाव या किसी कार्य करने अथवा निर्णय लेने में विलंब को शैक्षिक स्थगन के रूप में परिभाषित किया है। शैक्षिक स्थगन संज्ञानात्मक, भावात्मक और व्यवहारिक घटकों के साथ एक जटिल घटना है (रोथब्लम एट0एल0 1986)। वैन एर्डे, (2003) के अनुसार शैक्षिक स्थगन व्यक्तित्व और व्यक्ति भिन्नता के चरों जैसे आत्म–सम्मान, पूर्णतावाद एवं विक्षिप्तता से सम्बन्धित है।

शैक्षिक स्थगन के कारण

शैक्षिक स्थगन के परिणाम अत्यधिक नकारात्मक होते है, फिर भी छात्र शैक्षिक कार्यों को किस कारण स्थगित करते है इसके शोधकर्ताओं द्वारा पांच प्रमुख बताये गये है :–

1. **कौशल में कमी**

- जब किसी छात्र में कोई कार्य करने में उचित कौशल नहीं होता है तब वह उस कार्य को टालता रहता है उसे यह ज्ञात नही होता कि कार्य को पूर्ण कैसे करे।
- दूसरा महत्वपूर्ण कारण है प्रबन्धन कौशल न होना। जब में कार्य के प्रबंधन का आवश्यक कौशल नहीं होता तब वह महत्वपूर्ण कार्यों को भी स्थगित कर देता है क्योंकि उसे य नही पता होता कि अपने समय उचित प्रबंधन किस प्रकार करे कि सभी महत्वपूर्ण कार्य समय सीमा पूर्ण किया जा सके।

2. **वाह्य कारण :–** इस श्रेणी के अन्तर्गत दो उपश्रेणियाँ

- दूसरे लोगों द्वारा अवरोध – कभी कभी कोई कार्य दूसरे व्यक्ति पर निर्भर करता है। अगर वे किसी कारण वश कार्य में सहयोग नहीं करते तब कार्य स्वतः स्थगित हो जाता है। इस प्रकार के अवरोधों के लिए व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से उत्तरदायी नहीं होता वह दूसरे व्यक्ति को नियंत्रित नहीं कर सकता किन्तु स्वयं की प्रतिक्रिया को नियंत्रित कर सकता है।
- **स्वयं के द्वारा उत्पन्न अवरोध :–** जब व्यक्ति किसी कार्य के प्रति अत्यधिक प्रतिबद्ध हो जाता है तब भी वह कार्य को उचित प्रकार से पूर्ण नहीं कर पाता। इस प्रकार की समस्या का समाधान वास्तविकता को स्वीकार करता और उचित योजना बनाने में है। उसे कार्यों को उचित रूप से चयनित करना चाहिए और कम महत्वपूर्ण कार्यों को बाद के लिए रखना चाहिए।

3. **भावनात्मक समस्याएंः–** छात्रों की बीच शैक्षिक स्थगन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारण भावात्मक समस्या है। वे अनेक प्रकार की नकारात्मक विचारों से जुझते है। जैसे, विफलता का भय, आक्रामकता, पूर्णतावाद, निराश, तनाव, दबाव आदि। इस प्रकार की भावनात्मक नकारात्मकता से लड़ते हुए छात्र प्रायः

कार्य के प्रति उपेक्षित हो जाते हैं इनके इस व्यवहार से दो प्रकार के परिणाम होते है या तो वह दूसरों के कार्य को प्रभावित करते है फिर भी वह स्वयं के कार्यों को प्रभावित करते है।

4. **स्थगन की प्रवृत्ति–** कार्यों को बार–बार विलंबित करने से छात्रों में स्थगन प्रवृत्ति उत्पन्न हो जाती है और वह उनके दैनिक व्यवहार में परिवर्तित हो जाती है।
5. **आंतरिक कारणः–** कभी–कभी किसी कार्य को स्थगित करने का कोई विशेष कारण न हो कर आंतरिक कारण होता है। आंतरिक का अचेतन मन उसे उस कार्य को करने नहीं देता।

उपरोक्त कारणों के अतिरिक्त स्टील (2007) ने शैक्षिक स्थगन पर करे गये कई महत्वपूर्ण शोध का अध्ययन कर कुछ महत्वपूर्ण कारणों में विस्तृत किया है जो कि निम्न प्रस्तुत किये गये है–

- किसी कार्य के प्रति विमुखता के कारण छात्र अक्सर कार्यों को स्थगित कर देते है। छात्र में कार्य करने की क्षमता होती है पर वह कार्य उसे आकर्षित नहीं करता इस कारण वह कार्य को स्थगित कर समय पर पूर्ण नहीं करता।
- दूसरों द्वारा मूल्यांकन किया जाना और असफलता के भय से छात्र अक्सर कार्यों को विलंबित कर देते है।
- समय के प्रबंधन न कर पाने की स्थिति में भी छात्र शैक्षिक स्थगन करते है। वह महत्वपूर्ण कार्यों को क्रमानुसार नहीं लगा पाते और इस कारण उनके अनेक कार्य समय सीमा के अन्दर पूर्ण नहीं हो पाते।
- अवसाद और अभिप्रेरणा की कभी से भी छात्र का स्थगित करते है।
- वातावरण के कारण कार्य के प्रति एक्राग्रता क्षीण होता शैक्षिक कार्यों को पूर्ण करने के लिए गृह वातावरण अनुभव होना चाहिए अगर पढ़ाई के समय पर छात्र की एकाग्रता भंग होती है तो वह कार्य में रूचि नहीं ले पाता।
- अपनी क्षमताओं के बारे में नकारात्मक विचार रखना।

फेरारी (2007) के अनुसार छात्रों में स्थगन प्रवृत्ति वातावरण से प्रभावित होती है। कभी–कभी छात्र अपने अभिभावकों की आदतों का अनुसरण करते है या

वह अत्यधिक नियंत्रण के विरोध के रूप में कार्यों को पूर्ण करके स्थगित करते है।

इस प्रकार देखा जाये तो शैक्षिक स्थगन छात्रों के शैक्षिक सफलता के मार्ग में बाधा है क्योंकि यह छात्रों के कार्य की गुणवत्ता को कम करता है। छात्रों के जीवन में तनाव और नकारात्मक को बढ़ाता है और सीखने की गुणवत्ता को भी प्रभावित करता है (हॉवेल एवं वाटसन, 2007) शैक्षिक स्थगन से उभरने के लिए छात्रों को सहायता की आवश्यकता होती है। शैक्षिक स्थगन को रोकने और छात्रों की सहायता करने के लिए मुख्य भूमिका परिवार और विद्यमान द्वारा अपेक्षित होती है क्योकि यही वे संस्थायें है जो कि व्यक्ति के और मुख्यतः छात्रों के जीवन को प्रारंभिक रूप से प्रभावित करती है। शोधकार्यों द्वारा भी देखा गया है कि छात्र की मानसिकता और आदतों पर गृह वातावरण एवं विद्यालयी वातावरण का अत्यधिक प्रभाव होता है।

गृह वातावरण

वातावरण व्यक्ति के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। मानव विकास में जितना योगदान आनुवंशिकता का है उतना ही वातावरण का भी है। इस सम्बन्ध में वुडवर्थ कहते है कि व्यक्ति वंशानुक्रम तथा वातावरण का योग नहीं, गुणनफल है। वातावरण कोई भी बाह्य शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है (ग्रेवाल 2014)। आग्बेमुडिया एवं आइसा (2013) ने इस बात पर जोर दिया, कि वातावरण वह तत्काल परिवेश है जिसमें विद्यार्थी स्वयं को पाते है। वातावरण के शरीरिक और मनोवैज्ञानिक स्थितियों के रूप में भी जाना जाता है। जन्म के पश्चात एक बालक अपने आस–पास के वातावरण में बड़ा होता है।

गृह वातावरण के प्रत्यय को समझने से पहले परिवार का तात्पर्य आवश्यक है। अरस्तू के अनुसार मनुष्य एक सामाजिक जीव है। परिवार समाज की एक प्राथमिक इकाई है जिसमें मनुष्य जन्म लेता है और उसका पालन–पोषण होता है। मनुष्य को संस्कारित करने का उत्तरदायित्व सर्वप्रथम परिवार का होता है। परिवार एक ऐसा प्राथमिक समूह है जो मानव स्वभाव की पोषिका है तथा यह मानव में उत्कृष्ट भावना को पैदा करता है। परिवार के दो मौलिक कार्य है सामाजीकरण और व्यक्तित्व निर्माण। परिवार

बालक की प्रथम पाठशाला है जहां उसके व्यक्तितव का निर्माण होता है। परिवार द्वारा दी गयी शिक्षाएं जीवन–पर्यन्त आत्मसात् होती रहती है। बालकों में आत्मविश्वास पैदा करने में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। अगर बालक को माता–पिता का स्नेह और सहयोग नहीं मिलता तो उसके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता।

सरल शब्दों में बालक अपने परिवार को देखकर सीखता है और उसका अनुसरण करता है। वंदना और शर्मा (2012) ने जोर दिया, कि परिवार प्राथमिक संस्था है इसलिए बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह देखा गया है प्रायः जो बच्चे सफल और तरह से समायोजित होते है उनके माता पिता के बीच अच्छे संबंध होते है। ग्रेवाल (2014) के अनुसार अनुकूल वातावरण में रहने वाला बच्चा उज्जवल हो जाता है वही प्रतिकूल वातावरण में रहने वाला बालक पिछड़ जाता है। बच्चों के चारों ओर के मावीय तत्वों को वातावरण कहा जाता है। यह परिवार की सामाजिक शारीरिक और भावनात्मक गतिविधियों को सम्मिलत करते है। सभी कारक मिलकर गृह वातावरण का निर्माण करते है। गृह वातावरण का अर्थ माता–पिता, बच्चों और परिवार के सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंध है। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास में गृह वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। गृह वातावरण एक अमूर्त अवधारणा नहीं है। वह भौतिक और मनोवैज्ञानिक वातावरण का संयोजन है। भौतिक वातावरण भौतिक सुख सुविधाओं को समावेशित करके बनता है। वही पारिवारिक सदस्यों के बीच परस्पर संबंध, गृह वातावरणों का बालक के विकास पर सीधा प्रभाव पड़ता है। (मुकामा एवं मौला, 2010)।

गृह वातावरण संस्कृति में संस्कृति हर गृह में भिन्न होता है (मॉस एवं मॉस, 1986)। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर इसका सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार का योगदान होता है एपस्टीन (1992) के अनुसार अगर छात्र के माता–पिता जागरूक शिक्षित, जानकार और उत्साहजनक है तो ऐसा छात्र शैक्षिक कार्यों में आगे उच्च आकाक्षांए, सकारात्मक व्यवहार और विद्यालय के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है।

गृह वातावरण और शैक्षिक स्थगन

शैक्षिक स्थगन के परिणामों की काफी गंभीरता और विभिन्न पहलुओं से विश्लेषण किया गया है परन्तु इसके कारणों की गहनता से जांच अभी कम हैं, शोधकर्ताओं ने शैक्षिक स्थगन को स्वनियमन प्रक्रियाओं में विफलता के रूप में वर्णित किया है (ब्लंट एवं पाइलकिल, 2005; डेविड एवं लेंस, 2000; बोह्स एवं बॉमिस्टर, 2004)। किन्तु इन चरों के बीच संबंध पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार शैक्षिक स्थगन में गृह वातावरण का विशेष योगदान होता है। बुर्का एवं यूएन (1983) के अनुसार जिन परिवारों में माता–पिता बच्चों पर अत्यधिक दबाव बनाते है ऐसे परिवार में बच्चे स्वयं को अत्यधिक तनावग्रस्त पाते हैं और कार्य पूर्ण करने के लिए स्वयं पर ज्यादा ज़ोर देते है। माता–पिता की अपेक्षायें और आलोचना एक प्रकार के पूर्णवाद से जुड़ी होती है जो कि शैक्षिक स्थगन से स्पष्ट रूप से जुड़ी होती है (फेरारी एवं डायज – मोरोस, 2007) फेरारी और ओलिवेटी (1993) के अनुसार परिवार की गतिशीलता शैक्षिक स्थगन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

माता–पिता की शिक्षा और शैक्षिक स्थगन के मध्य विपरीत आनुपातिक संबंध है अर्थात् ॒ शिक्षित माता–पिता के बच्चों में शैक्षिक स्थगन कम होता है। अधिक शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों के समक्ष उदाहरण प्रस्तुत करते है। अधिक शिक्षित माता–पिता अच्छे पदों पर आसीन होते है और वे अपने बच्चों में उच्च शैक्षिक मूल्य डालते है। साथ ही वे अपने बच्चों की शिक्षा और अधिगम को बहुत महत्व देते है क्योंकि वे इसे अपने बच्चों के भविष्य के लिए महत्वपूर्ण साधन मानते है। इसलिए वे अपने बच्चों में कामकाजी नैतिकता को विकसित करते है (फेरारी और शेर, 2002) शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों की शैक्षिक कार्यों में सहायता जैसे कि विद्यालय द्वारा नियत कार्यों को पूर्ण करना और परीक्षा में इससे वे शैक्षिक स्थगन को रोकते है।

एपस्टीन (2001) के अनुसार शिक्षित माता–पिता अपने बच्चों की शिक्षा में बेहतर भागीदारी करते है और उनमें स्व–नियमन के मूल्य विकसित करते है। इससे

बच्चों में विद्यालय के प्रति बद्धता बढ़ जाती है। इस प्रकार शैक्षिक स्थगन को रोका जा सकता है (रोसारियों, 2006)।

ग्रोलनिक एवं रेयान (1989) के अनुसार जो माता–पिता अपने बच्चों में स्वयत्ता को प्रोत्साहित और बच्चों के कार्य की निगरानी प्रदान करते है उनके बच्चे अधिक आत्म–नियमित होते है। इस प्रकार गृह वातावरण के अन्य कारक जैसे, भौतिक सुविधायें परिवार की प्रकृति, माता–पिता का सहयोग, माता–पिता का व्यवहार, मातृत्व–पितृत्व शैली, पालन–पोषण व्यवहार और शैक्षिक कार्यों में भागीदारी बच्चों में शैक्षिक स्थगन कि प्रवृत्ति को कम करने में सहायक है।

विद्यालय वातावरण

घर के वातावरण से निकलने के बाद एक बालक पर सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव उसके विद्यालय के वातावरण का पड़ता है परिवार के बाद विद्यालय ही वह संस्था है जो बालक के संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक लक्षणों का पोषण करता है। यह बालक के सर्वांगीण विकास में विशिष्ट भूमिका का निर्वहन करता है। कठोर प्रशिक्षण, नियम अनुशासन और मूल्यों के विकास के द्वारा यह बालक के व्यक्तित्व को रूपांतरित कर उसे एक प्रभावशाली व्यक्तित्व प्रदान करता है। इसलिए एक बालक के जीवन में विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

जॉन डीवी के अनुसार– ''विद्यालय समाज का लघु रूप है''।

मिस जैस (2011) के अनुसार विद्यालयी वातावरण में शैक्षिक सुविधायें, मानसिक स्वास्थ्य, छात्र की सुरक्षा, भौतिक संसाधन और शैक्षणिक विषय शामिल होते है।

फ्रीबर्ग और स्टीन (1999) के अनुसार विद्यालय देश का महत्वपूर्ण अंग होता है। जो आध्यात्मिक शक्ति को पुष्ट करते है और आने वाली पीढ़ी के लिए ऐतिहासिक उपलब्धियों को बनाए रखते है।

बाला कृष्ण जोशी के अनुसार एक शब्द में, एक सुव्यवस्थित विद्यालय एक खुशहाल घर है, एक मंदिर, एक सामाजिक केन्द्र, लघु और आकर्षक राज्य है सभी खूबसूरती से एक सौंदर्य संरचना में मिश्रित है सागर और कपलान (1972) के

अनुसार अपने स्वभाव से घर एक जैविक और सामाजिक तत्व है जो व्यक्तियों के व्यवहार के विकास पर उच्च प्रभाव डालता है। परिवार के बाद विद्यालय बच्चों के समग्र विकास पर अत्यधिक प्रभाव डालता है। जब बच्चे विद्यालय जाना शुरू करते है तो उन्हें कई नई समस्याओं और अवसरों का सामना करना पड़ता है जो बाद में उनके संज्ञानात्मक विकास और सामाजीकरण में मदद करते है। विद्यालयी वातावरण में मनोवैज्ञानिक और शारीरिक दोनों पहलू शामिल है और दोनों एक दूसरे पर पारस्परिक प्रभाव डालते है (एक्स, 1992) विद्यालयी वातावरण बहुआयामी है और यह सब पर अर्थात् , छात्र, अभिभावक, कर्मचारी और शिक्षकों पर प्रभाव डालता है। एक प्रगतिशील विद्यालय का वातावरण सरल, शुद्ध और संतुलित होना चाहिए। विद्यालय छात्रों के समग्र विकास को सामने लाने के लिए एक आदर्श मंच के रूप में कार्य करता है। जीवन के हर पहलु में एक व्यक्ति को प्रशिक्षित कर उसे उत्कृष्टता की ओर ले जाता है अपने घर के वातावरण से निकल कर एक छात्र पर विद्यालयी वातावरण प्रमुख प्रभाव डालता है। जो बच्चे के संज्ञानात्मक मनोप्रेरणा और भावात्मक लक्षणों का पोषण करता है। यह उसके प्रभावी रूप से समग्र व्यक्तित्व, व्यवहार और आचरण में सहायता करता है।

हॉवर्ड, हॉवेल और ब्रेनार्ड (1987) के अनुसार विद्यालयी वातावरण सीखने का वातावरण है। इसमें विद्यालय के विषय में लोगों की भावनाऐं शामिल है। एक सकारात्मक वातावरण एक विद्यालय को ऐसा स्थान होता है जहां विद्यार्थी और कर्मचारी अपने जीवन का बड़ा भाग व्यतीत करता है।

नेशनल स्कूल क्लाइमेट कॉउन्सिल (2007) के अनुसार विद्यालय का वातावरण विद्यालय के लोगों के अनुभवों मानदंड़ो, लक्ष्यों, पारस्परिक संबंधों, शिक्षण और सीखने की प्रथाओं और संगठनात्मक संरचनाओं को दर्शाता है।

विद्यालय वातावरण के निर्धारक

विद्यालय वातावरण के विभिन्न निर्धारक है। पांच प्रमुख निर्धारक इस प्रकार है।

1. **संस्था :** विद्यालय प्रबंधकों द्वारा उचित नेतृत्व, योजना और निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त के रूप में विद्यालय के वातावरण का

उपयोग करने की उनकी प्रतिबद्धता, नीतियों का निर्धारण करना और उसे लागू करना।

2. **कर्मचारी :** कर्मचारी और छात्रों के मध्य संबंध। कक्षा प्रबंधन और अनुशासन, छात्रों के अनुकूल भौतिक और भावनात्मक वातावरण।
3. **छात्र :** छात्रों द्वारा नेतृत्व में भागीदारी और उनको योगदानकर्ता के रूप में देखना, उनके साथ उचित व्यवहार उनकी समस्याओं को शांतिपूर्ण रूप से हल करना और सम्मान देना।
4. **परिवार :** माता–पिता द्वारा छात्रों में उचित मूल्यों को पोषित करना, प्रथाओं, विश्वास और लोगों के प्रति सम्मान की भावना का विकास, साथी के साथ मतभेदों को हल करना शिक्षा, सहिष्णुता, संचार और अहिंसा के मूल्यों पर अमल करना और उनको सम्मान देना।
5. **समुदाय :** विद्यालय के बाहर का वातावरण, मूल्य, प्रथाएं और विश्वास, समुदाय द्वारा बच्चों और वयस्कों को महत्व देना अपने आस–पास के लोगों से उचित व्यवहार की शिक्षा और युवाओं का समर्थन।

विद्यालय वातावरण और शैक्षिक स्थगन

शैक्षिक स्थगन छात्रों के बीच एक जटिल समस्या है विशेष उन वातावरण में जहां पर छात्रों को एक समय सीमा विद्यालय नियत कार्यों को पूर्ण करना होता है। ऐसी स्थिति में छात्रों को समय और एकाग्रता की आवश्यकता होती है गफनी और गेरी (2010)। इस स्थिति में छात्रों द्वारा पूरे वर्ष अपने समय पर उचित प्रबंधन करने की आवश्यकता होती हैं अपर्याप्त स्व–नियमन जो शैक्षिक स्थगन के रूप में प्रकट होता है, विभिन्न प्रकार के नकारात्मक व्यवहारों को रूप देता है। स्टीवर्ट, स्टॉट एवं न्यूटॉल, स्टील, (2007) के अनुसार शैक्षिक स्थगन कार्य विमुखता और कार्य विलंब के रूप में प्रकट होते है। बालकिस, दूरू और बुलुस (2006) के अनुसार नकारात्मक समय प्रबंध शैक्षिक स्थगन का महत्वपूर्ण कारक है। बहुत से शोध कार्यों ने शिक्षकों और प्रशिक्षकों के शैक्षिक स्थगन पर प्रबन्ध की चर्चा की है। कॉर्किन और अन्य (2014) के अनुसार शैक्षिक स्थगन प्रशिक्षण से विपरीत रूप से संबंधित है क्योंकि जो प्रशिक्षक संगठित है वे छात्रों को स्वयं के कार्य व्यवस्थित

और योजनाबद्ध रूप से करने के लिए प्रशिक्षित करते हैं। इसी प्रकार ग्रुनशेल (2013) ने पाया की संगठित और क्रियाशील शिक्षक जो छात्रों को अच्छे शैक्षिक प्रदर्शन के लिए प्रोत्साहित करते है उनकी कक्षा में छात्र ज्यादा और रूचि लेते है और उनमे शैक्षिक स्थगन की प्रवृत्ति में कम पायी जाती है (कॉर्किन, 2014)। स्क्रॉ (2007) के अनुसार जो शिक्षक छात्रों पर दबाव न बनाते हुए अधिक कोमल व्यवहार करते है और समय सीमा पर जोर नहीं देते वे शैक्षिक स्थगन को बढ़ावा देते है।

अध्ययन का महत्व

शैक्षिक स्थगन छात्रों के बीच प्रचलित एक ऐसी प्रवृत्ति है जो उनकी उपलब्धियों और क्षमताओं को प्रभावित करती है। प्रथम दृष्टि में स्थगन एक सामान्य सी समस्या दिखाई पड़ती है किन्तु कुछ समय के उपरान्त यह एक गंभीर रूप ले लेती है जिसका छात्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। दीर्घकालीन स्थगन अन्तर्निहित विकार का संकेत है जिसके कारण अधिगम अक्षमता व मानसिक दौर्बल्य हो सकता है। बच्चों के विकास में गृह वातावरण और विद्यालय वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान होता है क्योंकि बच्चों के मूल स्वभाव का निर्माण परिवारिक और विद्यालयी पृष्ठभूमि एवं वातावरण के अनेक कारक बच्चों की अध्ययन आदतों का विकास करते है। यह सर्वविदित है कि माता–पिता और गृह वातावरण बच्चों की शैक्षणिक उपलब्धि और व्यवहार को बनाते और प्रभावित करते है (बौग्रिंड, 1993, ब्रैडली एवं कैुलडवेल 1984)। इसी प्रकार विद्यालय वातावरण कठोर प्रशिक्षण, अनुशासन और शिक्षण द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व में बदलाव लाता है। शैक्षिक स्थगन की प्रवृत्ति से छात्रों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह एक ऐसी समस्या है जो कि छात्रों की क्षमताओं और उपलब्धियों को प्रभावित करती है। दीर्घकालीन स्थगन अंतर्निहित विकार का संकेत हो सकता हैं इस विकास के कारण छात्रों द्वारा शिक्षा में अरूचि उत्पन्न हो सकती है। गृह वातावरण बालकों में अध्ययन आदतों को विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, वहीं विद्यालय का वातावरण उसके संज्ञानात्मक, भावनात्मक और क्रियात्मक क्षेत्रों का विकास

करता है। इस प्रकार गृह वातावरण और विद्यालय वातावरण दोनों ही पृथक रूप से बालक के सर्वांगीण विकास और व्यक्तित्व को प्रभावित करते है।

शैक्षिक स्थगन की वर्तमान समस्या को ध्यान मे रखते हुए शोधकर्ता ने गृह वातावरण और विद्यालय वातावरण का शैक्षिक स्थगन से संबंध का अध्ययन करने का प्रयास किया है। प्रायः यह देखा गया है कि अकारण चिन्ता, तनाव, आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में कमी आदि नकारात्मक प्रवृत्तियों से छात्र स्थायी ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते अतः शैक्षिक स्थगन का अध्ययन करना आवश्यक प्रतीत होता है।

शोध शीर्षक

''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण का उनके शैक्षिक स्थगन से संबंध का अध्ययन।''

तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण :

- **माध्यमिक स्तर :** माध्यमिक स्तर का तात्पर्य उन विद्यार्थियों से है जो कक्षा नौ एवं दस में अध्ययनरत् है।
- **शैक्षिक स्थगन :** इस शोध में शैक्षिक स्थगन से तात्पर्य है वह प्रक्रिया जिसके द्वारा छात्र शैक्षिक कार्यों को आगे के लिए विलंबित या स्थगित कर देते है।
- **गृह वातावरण :** गृह वातावरण से आशय है घर के मनोसामाजिक वातावरण का जिसमें एक बालक जन्म लेता है और संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं सामाजिक सहयोग जो बालक को प्रदान किया जाता है।
- **विद्यालय वातावरण :** विद्यालय वातावरण से तात्पर्य है कि विद्यालय के मनोसामाजिक वातावरण और विद्यालय द्वारा छात्रों को प्रदान किया गया संज्ञानात्मक, भावनात्मक एवं सामाजिक सहयोग।

उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का अध्ययन करना।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन का अध्ययन करना।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
11. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
12. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।
13. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

14. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन के मध्य सहसंबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें

1. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
6. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
7. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
8. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
9. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
10. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
11. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
12. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

13. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।
14. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

शोध का सीमांकन

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध निम्न सीमाओं के अन्तर्गत सम्पादित किया गया है –

- शोध प्रबन्ध केवल लखनऊ जनपद तक सीमित है।
- शोध प्रबन्ध में केवल यू0पी0 बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया है।

शोध अभिकल्प

प्रस्तुत शोध अध्ययन में स्वतन्त्र चर गृह वातावरण, विद्यालय वातावरण एवं शैक्षिक स्थगन हैं जबकि आश्रित चर, महिला–पुरूष एवं ग्रामीण–शहरी है।

जनसंख्या प्रतिदर्शन एवं चयन प्रक्रिया

- जनसंख्या – जनसंख्या शोधकर्ताओं के हित समूह से संबंधित एक या अधिक सामान्य विशेषताओं वाले समूह को कहते है। शोध के अन्तर्गत समष्टि को व्यक्तिओं घटनाओं के ऐसे समूह से संबंधित किया जाता है जिसमें उसके सभी सदस्य होते है।

प्रतिदर्श एवं प्रतिदर्शन विधियाँ

शोधकर्ता अपने शोध के लिए जनसंख्या से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों का चयन कर लेता है। इस चयनित संख्या को प्रतिदर्श कहा जाता है। प्रतिदर्शन चयन करने की प्रविधि को प्रतिदर्शन कहा जाता है।

करलिंगर (1986) के अनुसार प्रतिदर्शन ''किसी जनसंख्या या समष्टि से उस जनसंख्या के प्रतिनिधि के रूप में किसी भी संख्या का चयन है।''

प्रतिदर्शन के प्रकार

सम्भाविता			असम्भावित			
साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन	स्तरित यादृच्छिक प्रतिदर्शन	क्षेत्र प्रतिदर्शन	कोटा प्रतिदर्शन	उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन	हिमकटुंक प्रतिदर्शन	प्रासंग प्रतिदर्शन

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने साधारण यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए प्रतिदर्श का चयन किया है।

प्रतिदर्शन चयन की प्रक्रिया

सर्वप्रथम शोधकर्ता ने लखनऊ जनपद के सभी माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की। सूची जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय (DIOS), शिक्षा भवन, चौक, लखनऊ से प्राप्त की गई। सूची के अनुसार माध्यमिक स्तर के 785 विद्यालय लखनऊ जनपद में है। तत्पश्चात् सूची से सरल यदृच्छिक प्रतिदर्शन विधि का प्रयोग करते हुए 10 विद्यालयों का चयन किया गया। उसके उपरांत उन विद्यालयों में अध्ययनरत् 600 छात्र–छात्राओं का चयन यादृच्छिक प्रतिदर्शन विधि द्वारा किया गया इसमें 249 छात्र व 351 छात्राएं थी।

- **चयनित माध्यमिक स्तर के विद्यालय**

1. बद्री नारायन लाल वोकेशनल इण्टर कॉलेज, चित्रगुप्त नगर, सिंगार नगर, लखनऊ।
2. रामभरोसे मैकूलाल इण्टर कॉलेज, तेलीबाग लखनऊ।
3. जनता इण्टर कॉलेज, चन्दर नगर, आलमबाग, लखनऊ।
4. स्वतन्त्र इन्टर कॉलेज, स्नेह नगर, आलमबाग, लखनऊ।
5. काशीश्वर इण्टर कॉलेज, मोहनलालगंज, लखनऊ।
6. नवजीवन इण्टर कॉलेज, मोहनलालगंज, लखनऊ।

7. राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मलिहाबाद, लखनऊ
8. मालती नारायण इण्टर कॉलेज, मोहनलाल गंज, लखनऊ।
9. बी.टी.ए. इण्टर कॉलेज, काकोरी, लखनऊ।
10. एल.आर.एस.एस. इण्टर कॉलेज, बन्थरा, लखनऊ।

शोध अध्ययन के उपकरण

किसी भी समस्या के अध्ययन हेतु आँकड़ों का संकलन शोध का एक महत्वपूर्ण चरण है। इसके लिए शोधकर्ता तकनीकी भाषा में विभिन्न प्रकार के उपकरणों का प्रयोग करता है, इसे उपकरण या यंत्र कहते हैं। जिस विशेष उद्देश्य के लिए उनका उपयोग किया जाता है, उसके लिए कुछ विशिष्ट आवश्यकताओं के अलावा, सभी उपयोगी उपकरणों में विश्वसनीयता और वैधता जैसे कुछ सामान्य गुण होने चाहिए। वर्तमान अध्ययन के प्रासंगिक ऑकड़ें एकत्र करने के लिए, निम्नलिखित मानकीकृत उपकरणों का उपयोग किया गया था प्रस्तुत अध्ययन में अग्रलिखित उपकरणों का प्रयोग किया गया है

उपकरणों का विवरण

1. गृह वातावरण मापनी डॉ0 करूणा शंकर मिश्रा
2. विद्यालय वातावरण मापनी डॉ0 करूणा शंकर मिश्रा
3. शैक्षिक स्थगन मापनी डॉ0 अशोक के0 कालिया एवं मंजू यादव

शोध अध्ययन की सांख्यिकीय प्रविधियाँ

मध्यमान

किसी समूह के प्राप्तांकों का विवरण जब दो भागों में विभाजित हो जाता है तब वह मध्यमान कहलाता है। समंक विस्तार के मध्य स्थित होने के कारण मध्यमान को केन्द्रीय मूल्य माप भी कहा जाता है, क्योंकि यह व्यक्तिगत घर का जमाव इसके आस–पा होता है।

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

प्रमाणिक विचलन

विचलनशीलता के लिए सर्वाधिक प्रयोग क्षेत्र वाला गुणांक है। यह सभी प्राप्तांकों के मान के ऊपर आधारित होता है।

$$S.D = \sqrt{\frac{\Sigma(X-M)^2}{N}}$$

टी–परीक्षण

सामान्यतः टी–परीक्षण के माध्यों के बीच के अन्तर की सार्थकता की जॉच करने का एक महत्वपूर्ण प्राचलिक सांख्यिकी है। इसका प्रयोग सिर्फ माध्यों के अन्तर की सार्थकता की जॉच करने में ही नहीं वरन् अन्य सांख्यिकी जैसे पियरसन आर, कोटि अन्तर सहसम्बन्ध, अंक द्वि–पंक्तिक सहसम्बन्ध आदि की सार्थकता की जॉच करने में भी किया जाता है।

वास्तव में टी–परीक्षण दो माध्यों के अन्तर तथा इस अन्तर के मानक त्रुटि का एक अनुपात होता है।

टी–परीक्षण के व्याख्या सबसे पहले डब्ल्यू0एन0 गौसेट ने 'स्टूडेन्ट' नामक उपनाम के साथ 1908 में किया गया। इसलिए टी–परीक्षण को 'स्टूडेन्ट टी' भी कहा जाता है। बाद में आर0ए0 फिशर ने इसे काफी विकसित किया तथा इसकी व्याख्या कई ढंग से बाद में आर0ए0 फिशर ने इसे काफी विकसित किया तथा इसकी व्याख्या कई ढंग से की।

दो प्रतिदर्श माध्यों के अन्तर की सार्थकता की जॉच टी–परीक्षण से निम्नलिखित सूत्र द्वारा करते है।

सूत्र– $$t = \frac{M_1 - M_2}{\sigma_D}$$

इसमें मध्यमानों के अन्तर को ज्ञात करते समय धन व ऋण चिन्ह का महत्व नहीं होता है।

सहसम्बन्ध विधि

दो या दो से अधिक युग्मित चरों या डेटा के दो और सेटों के बीच संबंध को सहसंबंध कहा जाता है। इसे सहसंबंध के गुणांक द्वारा मापा और दर्शाया जाता है। पियर्सन का उत्पाद–आघूर्ण सहसंबंध गुणांक (आर) सहसंबंध का सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला उपाय है। इस माप का उपयोग वहां किया जाता है जहां चर मात्रात्मक होते हैं, अर्थात् अंतराल या अनुपात पैमाने पर। नाममात्र और क्रमिक चर के उपयोग के लिए सहसंबंध के अन्य तरीके विकसित किए गए हैं। दो नाममात्र चर के बीच संबंध का वर्णन करने के लिए आमतौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला एक उपाय आकस्मिकता गुणांक है। क्रमसूचक चरों के लिए उपयोग की जाने वाली तकनीक रैंक–ऑर्डर सहसंबंध है।

जब एक ही समूह के दो चर इस तरह से संबंधित होते हैं कि एक वृद्धि या कमी दूसरे चर के बढ़ने या घटने की ओर ले जाती है, तो उन्हें सहसम्बन्ध कहा जाता है। सामान्यतः सहसम्बन्ध दो प्रकार का होता हैः

(i) सकारात्मक सहसंबंध (+) और

(ii) ऋणात्मक सहसंबंध (–)

गिलफोर्ड के अनुसार, ''सहसंबंध गुणांक एक एकल संख्या है जो हमें बताती है कि दो चीजें किस हद तक संबंधित हैं, एक में भिन्नता दूसरे में भिन्नता के साथ किस हद तक जाती है।''

गुणनफल आघूर्ण सहसंबंध विधि में दोनों चरों पर विभिनन व्यक्तियों के प्राप्तांक के सापेक्ष जेड प्राप्तांकों की गुणाओं का आघूर्ण अर्थात् गुणनफल–आघूर्ण ज्ञात किया जाता है।

$$\gamma = \frac{\Sigma Zx \ \text{-}Zy}{N}$$

यह अपूर्ण दो चरों में साथ–साथ परिवर्तित हो रहे विचलन को भी व्यक्त करता है इसलिए इसे सहप्रसरण भी कहते है।

निष्कर्ष– परिणाम

परिकल्पना – 1

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का माध्य क्रमशः 278.12 , 271.98 है तथा मानक विचलन क्रमशः 37.91, 36.89 है माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण का टी–मान 0.048 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का गृह वातावरण समान हैं।

परिकल्पना–2

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का माध्य क्रमशः 197.34, 192.96 है तथा मानक विचलन क्रमशः 25.60, 26.00 है माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण का टी–मान 0.041 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् ् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का विद्यालय वातावरण समान हैं।

परिकल्पना–3

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं का माध्य क्रमशः 87.63, 86.07 है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.4, 9.1 है माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन का टी–मान 0.043 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का शैक्षिक स्थगन समान हैं।

परिकल्पना–4

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों का माध्य क्रमशः 275.24, 273.60 है तथा मानक विचलन क्रमशः 38.49, 35.99 है माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के गृह वातावरण का टी–मान 0.059 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के गृह वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के गृह वातावरण समान हैं।

परिकल्पना–5

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों का माध्य क्रमशः 194.52, 195.11 है तथा मानक विचलन क्रमशः 26.56, 25.06 है माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण का टी–मान 0.78 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण समान हैं।

परिकल्पना–6

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों का माध्य क्रमशः 86.53, 86.97 है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.45, 9.06 है माध्यमिक स्तर के शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन का टी–मान 0.56 प्राप्त हुआ है जो सार्थकता स्तर 0.05 पर सारणी मान 1.96 के मान से बहुत कम है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं है'' को स्वीकृत किया जाता है। इस प्रकार उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं। अर्थात् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी–ग्रामीण के विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन समान हैं।

परिकल्पना – 7

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .518 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 247) 247 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 51.8 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–8

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .578 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 247) 247 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है '' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 51.8 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–9

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .476 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 349) 349 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है '' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 47.6 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–10

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .459 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 349) 349 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 45.9 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्राओं विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–11

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .501 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 338) 338 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह

वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 50.1 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–12

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .501 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 338) 338 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 50.1 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत शहरी विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–13

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .495 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 268) 258 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह

वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 49.5 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के गृह वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

परिकल्पना–14

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है।

उपरोक्त परिकल्पना से स्पष्ट है कि सहसम्बन्ध गुणांक का मान .515 है जो सार्थकता स्तर 0.01 पर स्वतंत्रता कोटि (df = 258) 258 पर धनात्मक मान प्रस्तुत करता है अतः शून्य परिकल्पना '' माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में कोई सार्थक सह सम्बन्ध नहीं है'' को अस्वीकृत किया जाता है। अतः माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन में समानता प्रतिशतांक 51.5 है जो मध्य स्तर या परिमित स्तर की है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण विद्यार्थियों के विद्यालय वातावरण तथा शैक्षिक स्थगन परिमित रुप से सहसम्बन्ध है।

सिफारिशें और सुझाव

- विद्यार्थियों को उन आदतों और विचारों से अवगत कराएं जो उन्हे टालमटोल की ओर ले जाती हैं।
- विद्यार्थियों की आत्म–पराजित करने वाली समस्याओं जैसे चिंता, डर, खराब समय प्रबंधन, अनिर्णय और पूर्णतावाद पर ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई के लिए मदद लें।
- विद्यार्थियों को यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने और कार्यों और ठोस सार्थक लक्ष्यों के बीच एक व्यक्तिगत सकारात्मक कड़ी विकसित करने में मदद करें।

- माता पिता अपने बच्चो के लक्ष्य, ताकत, कमजोरियों और प्राथमिकताओं का मूल्यांकन करें।
- विद्यार्थियों में नए परिप्रेक्ष्य के लिए उनके परिवेश को संशोधित करें।
- विद्यार्थी दैनिक जीवन की गतिविधियों को पुनर्गठित करें।
- विद्यार्थियों को निर्धारित प्राथमिकताओं के अनुसार स्वयं को अनुशासित करने में शिक्षक मदद करें।
- मनोरंजक गतिविधियों, सामाजिकता और रचनात्मक शौक के साथ विद्यार्थी स्वयं को प्रेरित करें।
- विद्यार्थियों को प्रेरित करें कि वह समस्याओं को एक साथ हल करने की कोशिश करे और फिर डरने के बजाय समय के छोटे खंड में समस्याओं को हल करें।
- शिक्षक विद्यार्थी को प्रेरित करें कि वह पूर्व–निर्धारित लक्ष्यों को सुदृढ़ करें और कार्यों के संतुलित रुप से निर्धारित समय पर पूर्ण होने पर पुरस्कृत करें।

शैक्षिक निहितार्थ

शैक्षिक अनुसंधान शैक्षिक निहितार्थ के अभाव में अनुपयोगी होता है। अनुसंधान का महत्व उसकी शैक्षिक उपयोगिता में निहित होता है। प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के छात्रों में गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण का शैक्षिक स्थगन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन का उद्‌देश्य है यह जानना कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्रों के शैक्षिक स्थगन का गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन सर्वेक्षण विधि के माध्यम से देखा गया है। इस अध्ययन का उद्‌देश्य छात्रों में शैक्षिक स्थगन क्यों हो रहा है? इसमें गृह वातावरण एवं विद्यालय वातावरण की क्या भूमिका है? प्रायः यह देखा जाता है कि वातावरण छात्रों के शैक्षिक गतिविधियों को प्रभावित करता है। शोधकर्ता द्वारा यह देखा गया कि छात्रों में शैक्षिक स्थगन काफी अधिक हो रहा है इसलिए इस पर अध्ययन की आवश्यकता समझी गई और उस पर कार्य किया गया।

हर इंसान के पास हर दिन बिल्कुल बराबर घंटे और मिनट होते हैं फिर भी हम अक्सर समय की कमी की शिकायत किया करते हैं। छात्र प्रायः कई कारणों से स्थगन करते हैं। इसका कारण यह हो सकता है कि कार्य अप्रिय हो सकता है और उसे करने में उनकी अधिक रुचि नहीं होती और वह लगातार स्थगित होता रहता है। कुछ छात्र स्थगन करते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि वे कार्य को सफलतापूर्वक पूरा नहीं कर पाएंगे। इसलिए, ''विफलता का डर'' स्थगन के प्रमुख कारण के रूप में सामने आता है। अक्सर टालमटोल करने वालों में पूर्णतावादी अपेक्षाएँ होती हैं और वे अति ईमानदार होते हैं। सफलता या असफलता के तर्कहीन भय के प्रदर्शन से स्थगन हो सकता है। इसलिए माता–पिता, शिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों और नीति निर्माताओं के लिए यह आवश्यक कदम है कि छात्रों में स्थगन के कारणों की पहचान करें और फिर आवश्यक कदम उठाएं। स्थगन का परिणाम आमतौर पर दुखद पछतावा होता है। उन्हें उचित समय पर कुछ करने के महत्व पर जोर देना चाहिए और अपने कार्यों को समय पर करने के लिए तरीकों और रणनीतियों को अपनाना चाहिए और इस तथ्य से अवगत कराना चाहिए कि आज के कर्तव्यों को कल तक के लिए स्थगित करना हमें दोहरा बोझ देता है, सबसे अच्छा तरीका है कि उन्हें उनके उचित समय पर किया जाए।

स्थगन का परिणाम प्रायः दुखद होता है अतः उन्हें उचित समय से पूर्ण करने पर जोर देना चाहिए। विद्यार्थियों के शैक्षिक स्थगन में गृह वातावरण तथा विद्यालय वातावरण को बेहतर बनाया जा सकता है। विद्यार्थी को सामाजिक व नैतिक मूल्यों के माध्यम से उचित शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। शैक्षिक कार्यक्रम व उचित रणनीतियों की संरचना तैयार करते समय विद्यार्थी के चरित्र निर्माण के उद्देश्य को ध्यान में रखा जा सकता है। जिससे सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा मिले तथा विद्यार्थियों के टाल–मटोल वाले व्यवहार को सुधार कर उन्हें प्रभावी जीवनशैली की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। उन्हें इन तथ्यों से अवगत कराया जा सके कि आज के कर्तव्यों का निर्वहन कल तक के लिए स्थगित करना उचित नहीं है। सबसे अच्छा व्यवहार यह है कि उसे उचित समय में पूर्ण किया जाए।

भावी अनुसंधान हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्नलिखित सुझाव दिये जा सकते है–

1. भविष्य में प्राथमिक स्तर, स्नातक स्तर, परास्नातक स्तर एवं व्यावसायिक क्षेत्र में अध्ययनरत् विद्यार्थियों पर शोध कार्य किया जा सकता है।
2. भविष्य में गृह वातावरण का विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक चरों पर अध्ययन किया जा सकता है जिससे वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थियों को होने वाली परेशानियों का पता लगाया जा सकता है।
3. भविष्य में गृह वातावरण का प्रभाव विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक कौशलों को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है। इस पर अध्ययन किया जा सकता है।
4. भविष्य में विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों के नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य पर अध्ययन किया जा सकता है।
5. भविष्य में शैक्षिक स्थगन का अध्ययन भिन्न–भिन्न आर्थिक सामाजिक स्तर के छात्रों पर किया जा सकता है।
6. भविष्य में न्यादर्शों की संख्या में वृद्धि कर उनकी और अधिक सार्थकता को देखा जा सकता है।
7. प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। अतः इस अध्ययन को प्रयोगात्मक विधि द्वारा भी सम्पन्न किया जा सकता है।
8. प्रस्तुत शोध विषय का अध्ययन मात्रात्मक विधि से किया गया है। अतः इसका अध्ययन गुणात्मक शोध विधि से भी किया जा सकता है।